इकाई-II

5. ललद्यद

रचनाकार

ललद्यद कश्मीरी भाषा की लोकप्रिय संत-कवयित्री हैं। इनका जन्म सन् 1320 के लगभग कश्मीर स्थित पांपोर के सिमपुरा गाँव में हुआ था। उनके जीवन के बारे में प्रामाणिक जानकारी नहीं मिलती। ललद्यद को लल्लेश्वरी, लला, ललयोगेश्वरी, ललारिफा आदि नामों से भी जाना जाता है। उनका देहांत सन् 1391 के आसपास माना जाता है।

लोक-जीवन के तत्वों से प्रेरित ललद्यद की रचनाओं में तत्कालीन पंडिताऊ भाषा संस्कृत और दरबार के बोझ से दबी फारसी के स्थान पर जनता की सरल भाषा का प्रयोग हुआ है। यही कारण है कि ललद्यद की रचनाएँ सैकड़ों सालों से कश्मीरी जनता की स्मृति और वाणी में आज भी जीवित हैं। वे आधुनिक कश्मीरी भाषा का प्रमुख स्तंभ मानी जाती हैं।

विद्यार्थियों को भक्तिकाल की व्यापक जनचेतना और उसके अखिल भारतीय स्वरूप से परिचित कराने के उद्देश्य से यहाँ ललद्यद के चार वाखों का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। पहले वाख में ललद्यद ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किए जाने वाले अपने प्रयासों की व्यर्थता की चर्चा की है। दूसरे में बाह्याडंबरों का विरोध करते हुए यह कहा गया है कि अंतःकरण से समभावी होने पर ही मनुष्य की चेतना व्यापक हो सकती है। दूसरे शब्दों में इस मायाजाल में कम से कम लिप्त होना चाहिए। तीसरे वाख में कवयित्री के आत्मालोचन की अभिव्यक्ति है। वे अनुभव करती हैं कि भवसागर से पार जाने के लिए सद्कर्म ही सहायक होते हैं। भेदभाव का विरोध और ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध चौथे वाख में है। ललद्यद ने आत्मज्ञान को ही सच्चा ज्ञान माना है। प्रस्तुत वाखों का अनुवाद मीरा कांत ने किया है।

प्रस्तावना प्रसंग

खिलौना माटी का ही था
एक दिन होना ही था नाश।
पुरानी चीज़ नहीं टूटे
नई की कैसे हो फिर आस।

खिलौना यह सारी दुनिया
खेलता ऊपर वाला है।
हमीं यह समझ नहीं पाते
अजब यह खेल निराला है।

–राजीव कृष्ण सक्सेना

प्रश्न

1. यहाँ माटी का खिलौना किसे कहा गया होगा?
2. 'खिलौना यह सारी दुनिया' स्पष्ट कीजिए।
3. इन पंक्तियों का संदेश क्या है?

भूमिका

ललद्यद की काव्य शैली को **वाख** कहा जाता है। जिस तरह हिंदी में कबीर के दोहे, मीरा के पद, तुलसी की चौपाई और रसखान के सवैये प्रसिद्ध हैं, उसी तरह ललद्यद के वाख प्रसिद्ध हैं। अपने वाखों के ज़रिए उन्होंने जाति और धर्म की संकीर्णताओं से ऊपर उठकर भक्ति के ऐसे रास्ते पर चलने पर ज़ोर दिया जिसका जुड़ाव जीवन से हो। उन्होंने धार्मिक आडंबरों का विरोध किया और प्रेम को सबसे बड़ा मूल्य बताया।

SCERT TELANGANA

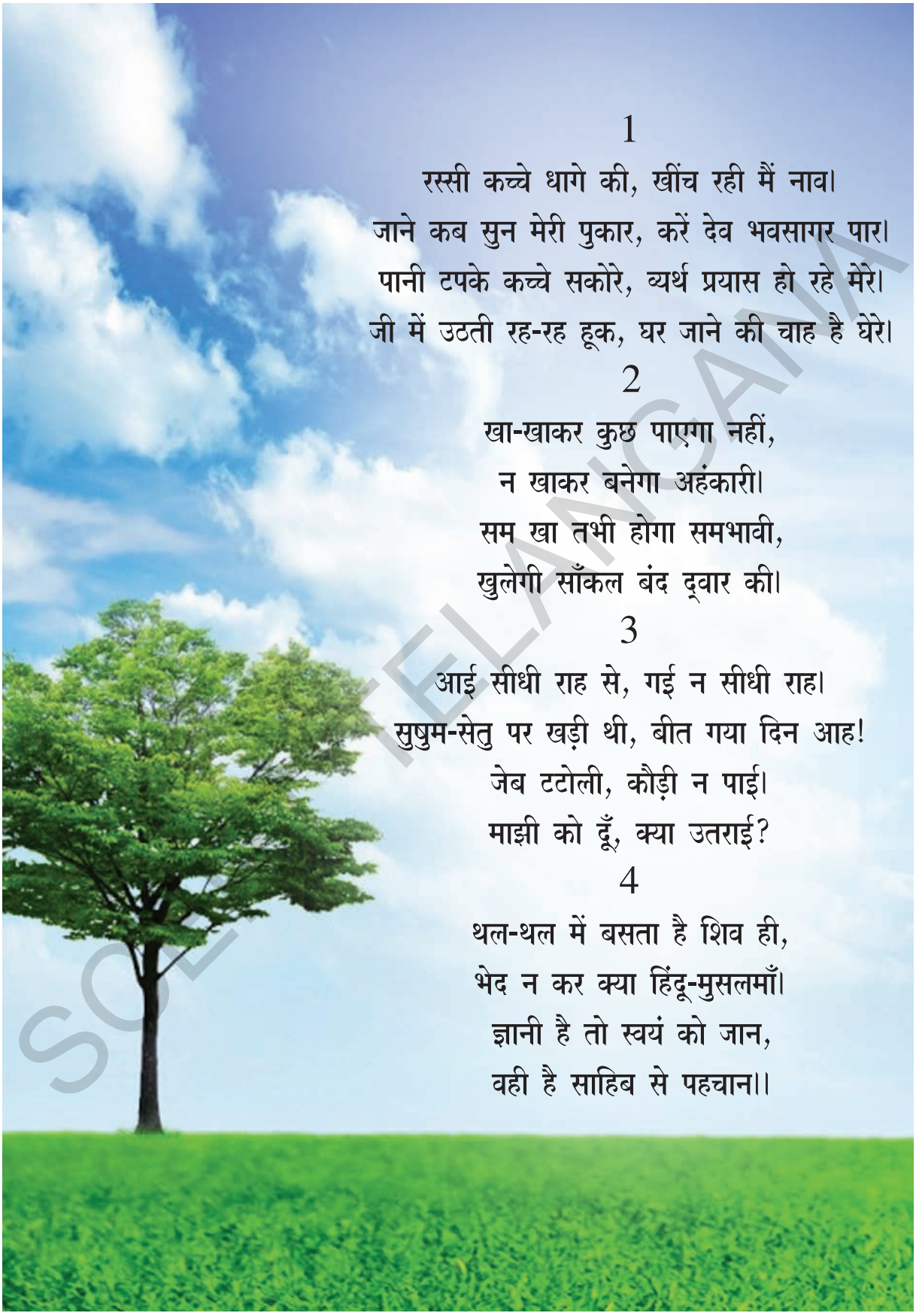

1

रस्सी कच्चे धागे की, खींच रही मैं नाव।
जाने कब सुन मेरी पुकार, करें देव भवसागर पार।
पानी टपके कच्चे सकोरे, व्यर्थ प्रयास हो रहे मेरे।
जी में उठती रह-रह हूक, घर जाने की चाह है घेरे।

2

खा-खाकर कुछ पाएगा नहीं,
न खाकर बनेगा अहंकारी।
सम खा तभी होगा समभावी,
खुलेगी साँकल बंद द्वार की।

3

आई सीधी राह से, गई न सीधी राह।
सुषुम-सेतु पर खड़ी थी, बीत गया दिन आह!
जेब टटोली, कौड़ी न पाई।
माझी को दूँ, क्या उतराई?

4

थल-थल में बसता है शिव ही,
भेद न कर क्या हिंदू-मुसलमाँ।
ज्ञानी है तो स्वयं को जान,
वही है साहिब से पहचान।।

SCERT TELANGANA

❖

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. हमारे संतों, भक्तों और महापुरुषों ने बार–बार चेताया है कि मनुष्यों में परस्पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता। लेकिन आज भी हमारे समाज में भेदभाव दिखायी देता है–
   क. आपकी दृष्टि में इस कारण देश और समाज को क्या हानि हो रही है?
   ख. आपसी भेदभाव को मिटाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. "ईश्वर प्राप्ति के लिए बहुत से साधक हठयोग जैसी कठिन साधना भी करते हैं, लेकिन उससे भी लक्ष्य प्राप्त नहीं होता।" यह भाव जिन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है, उन्हें लिखिए।
2. कवयित्री ने कच्चे धागे की तुलना किससे की है?
3. कवयित्री क्या प्रयास कर रही है जो व्यर्थ हो रहा है?
4. "ज्ञानी वही है जो स्वयं को पहचानता है और उसी के माध्यम से ईश्वर को जान पाता है।" यह भाव पाठ की किन पंक्तियों का है, ढूँढ़कर लिखिए।

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. "खा खाकर कुछ पाएगा नहीं, न खाकर बनेगा अहंकारी।" इसके माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाहती है?
2. कवयित्री द्वारा मुक्ति के प्रयत्न बेकार क्यों हो रहे हैं?
3. बंद द्वार की साँकल को किस प्रकार खोला जा सकता है? यहाँ बंद द्वार से क्या अभिप्राय है?
4. माँझी के समक्ष कवयित्री क्यों परेशान है?

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

अनुच्छेद पढ़िए। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क्या आपने उन साधु–संन्यासियों, फ़कीरों को देखा है जो हाथ में एकतारा, सारंगी, चिमटा या डफ आदि लेकर कुछ गा–गाकर सुनाते हैं। या फिर आप उन पुराने मंदिरों व दरगाहों में कभी

SCERT TELANGANA

गये हैं, जहाँ हारमोनियम, ढोलक, मंजीरों को बजाते हुए अलग किस्म के गीत गाये जाते हैं? अगर हाँ तो आप फिर ये भी जानना चाहते होंगे कि गानों से कुछ अलग तरीके की यह क्या चीज़ है। यह आजकल के गानों से भिन्न गायी जाने वाली एक विधा है। पहले समय में जब रेडियो, टी.वी., अखबार आदि नहीं थे। लोग घूम-घूमकर नेकी और भलाई के उपदेश दिया करते थे तथा लोगों में भक्ति व मानवता का भाव जगाने के लिए सूफी और संत कवियों की रचनाएँ गाते थे। ये काव्य आज भी हमारे लिए अनमोल निधि से कम नहीं हैं।

प्रश्न 1. साधु-संन्यासी-फ़कीर गीत गाते समय वाद्यों का उपयोग क्यों करते थे?

2. प्राचीन और आज के गीतों में क्या अंतर है?
3. साधु-संन्यासी-फ़कीर किसके कहने पर घूम-घूम कर नेकी और भलाई के संदेश देते होंगे?
4. आज घूम-घूमकर नेकी और भलाई के संदेश देने वाले साधु-संन्यासी-फ़कीर आदि क्यों कम हो गये हैं?
5. यदि रेडियो, टी.वी., समाचार पत्र आदि आधुनिकतम संचार के साधन न हों तो हमारे सामने कैसी समस्याएँ आ सकती हैं?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. संत कवियों ने नैतिकता पर विशेष महत्व क्यों दिया होगा?
2. मुक्ति का क्या अभिप्राय है? मनुष्य को मुक्ति कैसे मिल सकती है?
3. धार्मिक एकता की स्थापना के लिए हम क्या प्रयास कर सकते हैं?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. कवयित्री ने परमात्मा प्राप्ति का क्या उपाय बताया है?
2. कवयित्री परमात्मा प्राप्ति के मार्ग में किसे बाधक मानती है?
3. आपने कबीर को पढ़ा है। ललद्यद महिला होते हुए भी धर्म की संकीर्णताओं पर वैसे ही प्रहार करती हैं, जैसे कबीर। कबीर से तुलना करते हुए इनकी विशेषताएँ लिखिए।

SCERT TELANGANA

❖ सृजनात्मक कार्य

ललद्यद कश्मीर की कवयित्री हैं। कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है। किसी स्थान के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करते हुए एक छोटी कविता लिखने का प्रयास कीजिए।

❖ प्रशंसा

प्राचीन काल में अधिकतर महिलाएँ पढ़ी-लिखी नहीं होती थीं। उस काल में भी ललद्यद की कविताएँ उनकी ज्ञानपिपासुता को दर्शाती हैं, जो सराहनीय है। महिलाओं की शिक्षा समाज के लिए कितनी श्रेयस्कर है? इस पर अपने विचार लिखिए।

भाषा की बात

ललद्यद ने अपनी वाखों में मुहावरेदार प्रयोग किये हैं। इन मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

- हूक उठना
- भवसागर पार होना
- बंद साँकल खोलना
- जेब टटोलना
- कौड़ी न पाना
- थल-थल में बसना

परियोजना कार्य

भक्तिकाल में ललद्यद के अतिरिक्त तमिलनाडु की आंडाल, कर्नाटक की अक्क महादेव और राजस्थान की मीरा जैसी अन्य महिला कवयित्रियों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और उस समय की सामाजिक परिस्थितियों के बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA